[Continue ...]

कहा गया है कि वह दृश्य देखने के लिए हर्ष स्तूप के ऊपर चढ़ गया। जब वह सीढ़ियों से नीचे आ रहा था तो एक धर्मान्ध व्यक्ति हाथ में खंजर लेकर हर्ष की हत्या के उद्देश्य से उसकी ओर लपका लेकिन उसे पकड़ लिया गया। उसने स्वीकार किया कि उसे एक विधर्मी ने उकसाया था, क्योंकि हर्ष बौद्ध धर्म का बहुत पक्ष लेता था। बताया गया है कि 500 मुख्य ब्राह्मणों को पकड़ लिया गया और उन्होंने अपना-अपना अपराध स्वीकार कर लिया। उनमें से कुछ का वध कर दिया गया और लगभग 500 ब्राह्मणों को देश निकाला दे दिया गया।

प्रयाग सभा :-

उसी वर्ष हर्ष ने प्रयाग में एक और सभा ('मोक्ष परिषद्') का आयोजन किया। हर्ष ने बताया कि वह पिछले 30 वर्षों से ऐसी सभाएँ आयोजित करता रहा था। 643 ई० की सभा छठीं सभा थी। सभा में हर्ष और ह्वेनसांग के 18 राजसी मित्रों ने भाग लिया। उस अवसर पर 500000 से भी अधिक व्यक्ति उपस्थित थे। प्रयाग में किये गये कार्य के सम्बन्ध में पहले दिन रेत के ऊपर एक अस्थायी इमारत पर एक बुद्ध मूर्ति रखी गयी और लोगों में असंख्य वस्त्र तथा बहुमूल्य वस्तुएँ बांटी गयीं। दूसरे एवं तीसरे दिन क्रमशः सूर्य और शिव की मूर्तियों का सम्मान किया गया। चौथे दिन 10,000 बौद्ध भिक्षुओं को दान दिया गया। प्रत्येक भिक्षुओं को सोने के एक सौ (100) सुगन्धियाँ दी गयीं। अगले दिन 20 ब्राह्मणों को दान दिया गया। जैन धर्म एवं अन्य धर्मों के अवलम्बियों को 10 दिन दान दिया गया। सुदूर देशों के तपस्वियों को अगले दिन तक दान दिया गया। अगले एक महीने में निर्धन, अनाथ और पंगु लोगों को सहायता दी गयी। यह सब 75 दिन में हुआ। आगे ह्वेनसांग लिखता है — "सब कुछ दे चुकने के बाद उसने अपनी बहन (राज्यश्री) से एक पुराना वस्त्र मांगा और उसे पहिन कर उसने दस दिशाओं के बुद्धों की पूजा की और प्रसन्नता अनुभव की कि उसका कोष दानधर्म में समाप्त हो गया था।"

हर्ष ने बौद्ध धर्म की महायान शाखा को संरक्षण प्रदान किया था। देश में अनेक स्तूप, मठ तथा विहार थे। नालन्दा महाविहार में महायान बौद्ध धर्म की ही शिक्षा दी जाती थी। जैन धर्म बौद्ध धर्म के समान लोकप्रिय नहीं था। पंजाब, बंगाल तथा दक्षिण भारत के कुछ भागों में जैन अनुयायी निवास करते थे।

सामाजिक जीवन :-

हर्षकालीन समाज ब्राह्मण व्यवस्था पर आधारित था। परम्परागत चारों वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के अतिरिक्त समाज में अन्य अनेक जातियाँ एवं उपजातियाँ थीं। ब्राह्मणों का समाज में प्रतिष्ठित स्थान था। इस समय वैश्यों एवं शूद्रों के हाथ में भी राजनैतिक शक्ति आ गयी थी। अन्तर्जातीय विवाह होते थे। पुनर्विवाह नहीं होते थे तथा सती प्रथा का प्रचलन था। 'हर्षचरित' से पता चलता है कि हर्ष की माता यशोमती सती हो गयी थी। कुलीन परिवार के

[Conti.....]

लोग थे, जो कई पत्नियाँ रखते थे। बाल-विवाह का प्रचलन था। इससे ऐसा लगता है कि कन्याओं को पर्याप्त शिक्षा नहीं मिल पाती होगी, केवल कुलीन परिवारों की कन्याएँ ही शिक्षित होती थीं। कहीं-कहीं पर्दा-प्रथा का भी प्रचलन था। सामान्य लोगों का जीवन सुखी और आमोदपूर्ण था।

ह्वेनसांग हर्षकालीन भारतीयों के भोजन तथा वस्त्रों का भी उल्लेख करता है। लोग शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे। गेहूँ और चावल का प्रयोग अधिक मात्रा में होता था। कुछ लोग मदिरा का भी सेवन करते थे। साधारणतः भारतीयों को श्वेत वस्त्र प्रिय थे। स्त्री एवं पुरुष दोनों ही आभूषण धारण करते थे।

[Continue.....]